महाकवि कालिदास ने 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' नामकरण क्यों किया था इस नाटक का नाम अभिज्ञान शाकुन्तलम् क्यों पड़ा? समीक्षा करें :

कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत साहित्य के कवियों में सर्वश्रेष्ठ हैं। उनकी सभी कृतियाँ सुरभारती के भण्डार के अक्षय निधि हैं। महाकवि के नाम से अनेक कृतियों का उल्लेख मिलता है परन्तु प्रामाणिक रचनाएँ निम्नलिखित हैं —

कुमारसंभवम्, एवम् रघुवंश, दो महाकाव्य, मेघदूतम् खण्डकाव्य जिसे आधुनिक विद्वान् गीतिकाव्य भी कहते हैं, ऋतुसंहार खण्डकाव्य, तथा उत्कृष्ट कोटि के तीन नाटक रत्न हैं — मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, और अभिज्ञान शाकुन्तलम्। इन सभी कृतियों में अभिज्ञान शाकुन्तलम् कवि की वैसी अमूल्य कृति है जिसने कालिदास ही नहीं प्रत्युत संस्कृत साहित्य को ही विश्ववन्द्य बनाने का गौरव प्राप्त किया है। इस नाट्य कृति की प्रशंसा यूरोपीय विद्वानों तथा भारतीय विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से की है। आलोचकों ने शाकुन्तलम् को तो महाकवि कालिदास का सर्वस्व कहकर अभिहित किया है। यहाँ विचारणीय विषय है कि कालिदास ने अपनी इस अमूल्य कृति का नामकरण 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' क्यों किया।

राजा दुष्यन्त ने तपोवन में कण्वपालित पुत्री शकुन्तला से गान्धर्व-विधि से विवाह किया। कुछ दिनों के बाद राजा अपने नगर की ओर चला गया। जाते समय वह अपने नामों से अंकित एक अंगूठी अभिज्ञान (चिह्न) के रूप में शकुन्तला को दे गया था। कण्व ऋषि को जब इस गान्धर्व विवाह का पता चला तब उन्होंने शकुन्तला को राजा के पास भिजवा दिया। परन्तु दुर्वासा के शाप के कारण दुष्यन्त उसे पहचानने में असमर्थ हो गया। शकुन्तला ने राजा के द्वारा दी गई अंगूठी दिखलाकर उसे बीते वृत्तान्त की याद दिलानी चाही किन्तु अंगूठी अंगुली में नहीं थी। वह पहले ही मार्ग में शक्रावतार पर शचीतीर्थ का वन्दन करते समय जल में गिर चुकी थी। निराश होकर निराश्रया ~~मूर्छित~~ शकुन्तला मूर्छित होने लगी इतने में एक तेज ज्योति

(7)

मूर्ति प्रगट हुई और शकुन्तला को लेकर अदृश्य हो गई। इसके बाद राजपुरुषों ने एक धीवर के पास - राजा की अंगूठी देखी उन्होंने उसे चोर समझकर - पकड़ा। प्रधान राजपुरुष राजदत्त अंगूठी लेकर राजा - के पास गया। उसे देखते ही राजा को शकुन्तला के साथ अपने गान्धर्व विवाह का वृत्तान्त स्मरण हो आया। उसे अपनी भूल पर पश्चात्ताप हुआ और उसी समय से वह शकुन्तला के वियोग में दुःखी रहने लगा।

इस प्रकार इस नाटक में अंगूठी रूपी अभिज्ञान से शकुन्तला पहचाने जाने का वृत्तान्त - होने के कारण इसे 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' कहते हैं। यहाँ यह बात स्मरणीय है कि पञ्चम अंक के - अन्त में अंगूठी देखकर राजा को 'शकुन्तला की जो - याद आई उसी के कारण इस नाटक को यह नाम - दिया गया है। सप्तम अंक में तो एक दूसरे को पहचानकर मिलन होने के पश्चात् शकुन्तला ने राजा के अंगुली में अंगूठी देखी अतः यहाँ की घटना का इसके नामकरण पर कोई प्रभाव नहीं - पड़ा है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्वतः सिद्ध है कि शाकुन्तलम् नाटक में अभिज्ञानरूपा अंगूठी - की सर्वातिशायी महत्ता है जिसको आधृत कर - पूरी कहानी घटित होती है। अतः महाकवि कालिदास के द्वारा 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नामकरण युक्ति युक्त एवं सर्वथा समीचीन है।

//